भारतीय धार्मिक चित्रकला की प्रकाशन स्थली– गीता प्रेस गोरखपुर

जूली त्यागी
शोध छात्रा
दिगम्बर जैन महाविद्यालय बडौत (बागपत)
ईमेलः jully.tyagi88@gmail.com

ड़ॉ0 गीता राणा
अध्यक्षा,एसो0 प्रोफेसर, कला विभाग
दिगम्बर जैन महाविद्यालय बडौत (बागपत)
geeta.rana219@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

जूली त्यागी
ड़ॉ0 गीता राणा

'भारतीय धार्मिक चित्रकला की प्रकाशन स्थली–गीता प्रेस गोरखपुर'

Artistic Narration 2020, Vol. XI, No. 1, pp.31-39

https://anubooks.com/?page_id=6863

सारांश

भारतीय चित्रकला हमेशा से ही धर्म प्रधान रही हैं। प्राचीन भारतीय कला का कार्य धर्म का प्रचार करना रहा हैं, चाहे वह हिन्दू कला हो, बौद्व कला हो या जैन कला हो। प्राचीन इतिहास को देखा जाए तो प्रागैतिहासिक काल, सिन्धु सभ्यता, अजन्ता शैली, पाल शैली, अपभ्रंश शैली, राजस्थानी शैली, मुगल शैली, पहाड़ी शैली, और कालीघाट शैली से लेकर आधुनिक काल तक सभी युगों में भारतीय कला धर्म से प्रेरित हुई। आधुनिक काल में सनातन धर्म से सम्बन्धित धार्मिक साहित्य के आकर्शक चित्रों को साकार रुप प्रदान करने वाली एकमात्र आध्यात्मिक संस्था गीता प्रेस (गोरखपुर) हैं। गीता प्रेस का मुख्य आकर्षण बिन्दु उसके बहुरंगी चित्र हैं। संस्थापकों का मानना हैं कि इन बहुरंगी चित्रों के बिना साहित्य का कोई आधार नही हैं, वह अध ूरा हैं। भारतीय चित्रकारों ने हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाई जी) की सुन्दर प्रेरणा से ध ार्मिक चित्रों को एक नई दिशा प्रदान की, जिसमें विनय कुमार मित्रा, जगन्नाथ प्रसाद गुप्त और भगवानदास जैसे सरीखे कलाकार अपनी प्रतिभा को निखार सके।

''सिर्फ प्रेस नहीं, आस्था और श्रद्वा का विश्वसनीय केन्द्रस्थल हैं – ''गीता प्रेस''

प्रस्तावना–

भारतीय चित्रकला हमेशा से ही धर्म प्रधान रही हैं। प्राचीन भारतीय कला का कार्य धर्म का प्रचार करना रहा हैं, चाहे वह हिन्दू कला हो, बौद्व कला हो या जैन कला हो। प्राचीन इतिहास को देखा जाए तो प्रागैतिहासिक काल, सिन्धु सभ्यता, अजन्ता शैली, पाल शैली, अपभ्रंश शैली, राजस्थानी शैली, मुगल शैली, पहाड़ी शैली, और कालीघाट शैली से लेकर आधुनिक काल तक सभी युगों में भारतीय कला धर्म से प्रेरित हुई। आधुनिक काल में सनातन धर्म से सम्बन्धित धार्मिक साहित्य के आर्कषक चित्रों को साकार रुप प्रदान करने वाली एकमात्र आध्यात्मिक संस्था गीता प्रेस (गोरखपुर) हैं। गीता प्रेस का मुख्य आकर्षण बिन्दु उसके बहुरंगी चित्र हैं। संस्थापकों का मानना हैं कि इन बहुरंगी चित्रों के बिना साहित्य का कोई आधार नही हैं, वह अधूरा हैं। भारतीय चित्रकारों ने हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाई जी) की सुन्दर प्रेरणा से धार्मिक चित्रों को एक नई दिशा प्रदान की, जिसमें विनय कुमार मित्रा, जगन्नाथ प्रसाद गुप्त और भगवानदास जैसे सरीखे कलाकार अपनी प्रतिभा को निखार सके। **प्राचीन भारतीय कला का कार्य धर्म का प्रचार करना रहा हैं, चाहे वह हिन्दू कला हो, बौद्व कला हो या जैन कला हो।**[1] ''गीता प्रेस'' यह नाम ही अपने में सम्पूर्ण परिचय हैं। इसका नामकरण भगवान श्रीकृष्ण की अमूल्य और कल्याणमयी वाणी ''गीता'' के नाम पर हुआ था। सन् 1923 ई0 में इसकी स्थापना की गयी थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य गीता, रामायण, उपनिषद, पुराण और अन्य पुस्तकों–पत्रिकाओं को प्रकाशित करके सनातन धर्म के नियमों का आम जनता के मध्य प्रचार करना हैं। यह हिन्दू संस्कृति की विशेषता हैं कि इसमें प्रत्येक कार्य अपने कल्याण का उद्देश्य सामने रखकर करने की प्रेरणा दी गयी हैं। वह सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया गया हैं। यह संस्था न तो किसी के द्वारा दान ग्रहण करती हैं और न ही इसके प्रकाशन में विज्ञापनों को स्वीकार करती हैं।

गीता प्रेस ने धर्म के प्रति जागरुकता बनाये रखने के लिए धार्मिक पुस्तकों का सहारा लिया, जिससे समाज में हिन्दू धर्म का उदय किया जा सके। गीता प्रेस की कोई भी प्रकाशित पुस्तकें हो उनमें उतना ही परिवर्तन किया जाता हैं, जितना कि प्रकाशन को सुन्दर श्रेष्ठतम बनाने में सहायक हो। वैसे परिवर्तन तो प्रकृति का नियम हैं। यहाँ पर मूल बातों को सरल भाषा में समझाने का प्रयास किया गया हैं। इसी कारण लोगों ने इनको स्वीकार किया हैं। मात्र कुछ पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ कर यह संस्था सीमित साधनों के साथ शुरु की गई थी। गीता प्रेस गोरखपुर स्थित यह जाना माना संस्थान 97 वर्षो से धर्म और अध्यात्म का उजाला चारों और फैला रहा हैं। यह प्रकाशन आधुनिक नितनवीन तकनीको के द्वारा आज भी देश विदेश में अपनी अलग पहचान बनाए रखने में सफल हैं। यह एकमात्र ऐसा प्रेस है जो पुराने हिन्दू धर्म ग्रंथों और शिक्षाओं के प्रकाशन के लिए जाना जाता हैं।

गीता प्रेस का नाम आते ही सेठ जयदयाल गोयन्दका (1885–1965) का नाम तरोताजा हो जाता हैं। ये गीता प्रेस के संस्थापक के रुप में पहचाने जाते हैं। बाल्यकाल से ही धार्मिक विचारों से प्रभावित थे। इनके परिवार में धार्मिक पुस्तकें पढ़ने के लिए मंगायी जाती थी। जिस कारण उनके मन में धार्मिक विचार प्रगाढ़ रुप लेते जा रहे थे। जयदयाल गोयन्दका को गीता अध्ययन में विशेष रुचि थी, वे प्रतिदिन गीता – पाठ किया करते थे और विभिन्न स्थानो में घूमकर गीता का प्रचार–प्रसार किया करते थे। उन्होंने गीता व अन्य धार्मिक ग्रन्थों का गहनता के साथ अध्ययन किया और अपना जीवन धर्म प्रचार के कार्यो

में समर्पित कर दिया। कोलकता में ''गोविन्द–भवन'' की स्थापना की। कोलकता के भद्रपुरुष जयदयाल गोयन्दका जी ने अपने मित्रों के साथ मिलकर अपनी आन्तरिक करुणा को सत्संग का रुप दिया, उसी के फलस्वरुप ''गोविन्द–भवन'' की स्थापना की गयी। इस सत्संग में आने वाले श्रोताओं की संख्या लगातार बढ़ती रही जिसके फलस्वरुप संज्ञान में लाया गया कि गीता को जन–जन तक पहुँचाने के लिए शुद्व पाठ वाली पुस्तक की आवश्यकता हैं, किन्तु जो उस समय उपलब्ध नहीं थी। अतः उन्होंने गीता को शुद्व भाषा में प्रकाशित करने के उद्देश्य से 23 अप्रैल सन् 1923 ई0 को गोरखपुर में गीता प्रेस की स्थापना की। इस कार्य में हनुमान प्रसाद पोद्दार, जो उनके घनिष्ठ मित्र थे, ने पूरा सहयोग प्रदान किया। इसके लिए गोरखपुर में एक छोटे से किराए के मकान में तीन मशीनें और मुट्ठी भर लोगों ने गीता का प्रकाशन करना शुरु किया। धीरे–धीरे गीता के साथ–साथ अन्य धार्मिक ग्रन्थ भी प्रकाशित किए जाने लगे। इन ग्रन्थों को सस्ते मूल्य पर जन–जन में पहुँचाने का श्रेय सेठ जी को जाता हैं। गीता प्रेस की प्रसिद्वि का मुख्य कारण है कि इनकी पुस्तकें काफी सस्ती हैं। साथ ही प्रिटिंग बहुत ही साफ–सुथरी हैं। फॉन्ट का आकार भी बड़ा हैं। आज भी गीता प्रेस हिन्दू धार्मिक पुस्तकों के लिए सबसे अच्छा स्रोत्र माना जाता हैं। हिन्दू धर्म में आस्था रखने वाला कोई ही परिवार ऐसा होगा, जो गीता प्रेस गोरखपुर के नाम से परिचित नहीं होगा। **(चित्र संख्या–1)**

भारतीय आध्यात्मिक जगत में हनुमान प्रसाद पोद्दार (1892–1971) सांस्कृतिक पत्रकारिता के प्रेरणास्तम्भ के रुप में जाने जाते हैं। भारत में उनका नाम आदर के साथ लिया जाता हैं। गीता प्रेस के सम्पादक के रुप में एक मिसाल हैं–हनुमान प्रसाद पोद्दार। दुनिया में हिन्दू धर्म के मूल्यों–सिद्वान्तों की अलख जगाने में उनका अप्रितम योगदान हैं। सेठ जयदयाल के साथ–साथ भाई जी दोनों का विशेष योगदान गीता प्रेस के दो स्तम्भों की भांति है। कुछ वर्षो बाद 1926 ई0 में मारवाड़ी अग्रवाल महासभा का आठवाँ अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में घनश्याम दास बिड़ला जी की, जयदयाल गोयन्दका और हनुमान प्रसाद पोद्दार जी से मुलाकात हुई। बिड़ला जी इन दोनो के लगन–परिश्रम से अत्यन्त प्रभावित हुए। दिल्ली में सेठ जमुनालाल बजाज की अध्यक्षता में हुए इस अधिवेशन में बिड़ला जी ने भाई जी से कहा था–''हनुमान प्रसाद पोद्दार जी, केवल गीता के प्रचार तक सीमित रहने से आपका उद्देश्य पूरा नही होगा, अपितु हिन्दू धर्म व संस्कृति को स्थापित करने हेतु एक स्तरीय पत्रिका भी होनी चाहिए।'' पोद्दार जी ने इस सुझाव से सेठ जी को अवगत कराया, जिसके फलस्वरुप घनश्याम दास बिड़ला के परामर्श से ही ''कल्याण'' मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था। भाई जी के द्वारा इस पत्रिका का नाम सुझाया गया ''कल्याण''। जो मानव जाति का कल्याण कर सकें। कल्याण का मुख्य उद्देश्य था–समाज के नैतिक मूल्यों की रक्षा करना। अतः कल्याण के आदि सम्पादक के रुप में पोद्दार जी को दुनिया भर के अध्यात्म प्रेमियों के बीच लोक प्रसिद्वि प्राप्त हुई। **(चित्र संख्या–2)**

भारतीय चित्रकारों ने हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाई जी) की सुन्दर प्रेरणा से धार्मिक चित्रों को एक नई दिशा प्रदान की। पोद्दार जी सुबह चित्रकारों को देवी–देवताओं के चित्रों की भाव–भंगिमा, वस्त्र सज्जा, मुकुट, आभूषण, आयुध, आसन आदि के बारे में वर्णन किया करते थे, उसी के आधार पर चित्रकार बहुरंगी और श्वेत–श्याम चित्रों में भावना भरने का कार्य बड़ी सजीवता से करते थे। कला के क्षेत्र में प्रसिद्वि पाने वाले इन चित्रकारों की दक्षता को समाज ने भली–भाँति अभिव्यक्त किया हैं। इन चित्रकारों

ने काल्पनिक रुप से देवी–देवताओं और उनसे जुड़े प्रसंगो को दिखाती दस हजार से अधिक कृतियों को कागज पर उत्कीर्ण किया हैं। किन्तु पोद्दार जी के परमात्मा में लीन होने के पश्चात, गीता प्रेस में रहे दो चित्रकार विनय कुमार मित्रा और भगवानदास वैसा जीवन्त चित्रण नहीं कर सके। गीता प्रेस के लिए धार्मिक और पौराणिक प्रसंगो पर आधारित चित्र बनाए गए। साँचा बनाने के बाद कोई चित्र पसन्द नहीं आता तो उसे प्रकाशित नहीं किया जाता था। ऐसे हजारों चित्रों के फोल्ड़र गीता प्रेस में पड़े हुए हैं। धार्मिक ग्रन्थों के लिए भाई जी की देव कल्पनाओं के आधार पर बने चित्र करोड़ों पुस्तकों के माध्यम से पूरी दुनिया में पहुँच रहे हैं। गीता प्रेस में स्थित मन्दिर में तीन हजार से अधिक चित्र प्रमुख तीन चित्रकारों द्वारा बनाए हुए हैं। **ऐसा कहा जाता है कि रामायण धारावाहिक को बनाने से पहले रामानन्द सागर गोरखपुर आए थे।**[2] रामानन्द सागर ने इन आश्चर्य–जनक चित्रों की बारीकियों को लेकर अध्ययन किया था और कहा था कि उन्हीं चित्रों के माध्यम से मैं अपने धारावाहिक के पात्रों की वस्त्र–सज्जा और सेट का निर्माण करुगाँ। **(चित्र संख्या–3 व 4)**

गीता प्रेस के धार्मिक चित्रों में भगवान राम और श्रीकृष्ण की लीला का सचित्र दर्शन महज एक बड़ी उपलब्धि हैं। शिव की बारात हो या शिव पार्वती विवाह, गणेश–लीला हो या स्वामी कार्तिकेय का तारकासुर से युद्व इन सब चित्रों को देखकर पौराणिक–धार्मिक प्रसंग सजीव हो गए लगते हैं। गीता प्रेस धार्मिक विषयों जैसे–माँ सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, भगवान विष्णु, राधा–कृष्ण, सीता–राम, हनुमान, लड्डू–गोपाल, राम–दरबार आदि स्वरुपों वाले पोस्टरों को भी प्रकाशित करता रहा हैं। इन पोस्टरों को उनके अपने कलाकारों द्वारा हस्तनिर्मित किया जाता था। **(चित्र संख्या–5)**

लीला चित्र मन्दिर

गीता प्रेस के धार्मिक चित्रों को ऐसा चित्रित किया गया हैं कि प्राचीन शास्त्रों में जैसा वर्णन ऋषि–मुनियों की अमोघ वाणी द्वारा हुआ हैं, वैसा ही सजीव चित्रण कलाकारों ने किया हैं। महान भारतीय कलाकारों द्वारा तैयार चित्रों का एक बड़ा संग्रह आर्ट गैलरी में प्रदर्शित किया गया हैं। **गीता प्रेस के भव्य लीला चित्र मन्दिर में भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण की लीलाओं के रमणीय 684 चित्रों के अतिरिक्त अनेक हस्तनिर्मित चित्रों का संग्रह हैं।**[3] जिनको जन्म से लेकर अन्त तक व्यवस्थित क्रम में दिखाया हैं। श्रीकृष्ण की लीला को दर्शाने वाली 92 पुरानी मेवाड़ी शैली की पेण्टिग का सेट कलाकारों के द्वारा किया गया सराहनीय कार्य हैं। सम्पूर्ण श्रीमद्भगवतगीता को दीवारों की भित्ती पर संगमरमर के खण्ड़ो पर अंकित किया गया हैं। साथ ही संत भक्तों के लगभग 700 दोहे और महान संतो के उच्चारित छन्द भी। **(चित्र संख्या–6)**

सिर्फ किताबें लोगों को गीता प्रेस में आकर्षित नही करती हैं, बल्कि लीला चित्र मन्दिर का आकर्षण भी एक महत्वपूर्ण बिन्दु हैं। यह हस्तनिर्मित चित्रों का एक विशाल संग्रह हैं जिसमें मुख्यतः जीवन का चित्रण किया गया हैं। चित्र मन्दिर की यात्रा किए बिना गीता प्रेस में जाना निरर्थक माना जाता हैं। **''चित्रों का सार रंगो के प्रभाव से अधिक शक्तिशाली हैं। चित्र मन्दिर की वृहद छत को धारण करने वाले चार स्तम्भ एक दिलचस्प कार्य करते हैं।**[4] इन स्तम्भों पर भगवान राम और कृष्ण के जीवन को दिखाती त्रि–आयामी पेण्टिग बनायी गयी हैं। इन सृजित चित्रों का सन्देश यह हैं कि ईश्वर कण–कण में व्याप्त हैं। यहाँ एक अन्य पेण्टिग हैं जिसका नाम हैं–''वृक्षालतादी में वनवासी

श्रीराम'' इस पेण्टिग को असाधारण बनाता हैं, वह यह हैं कि इसमें भगवान राम की एक छिपी हुई छवि हैं जो सुन्दरता से चित्रित एक पेड़ के बीच हैं। इसके अलावा ''पहाड़ों के एक भाग में शिव और पार्वती की मनोहर छवियाँ तथा दूसरे भाग में कृष्ण की तस्वीरें दर्शकों को रोमांच से भर देती हैं। ''मृगत्रिशना'' पेण्टिग तीन वर्गो के जरिए शराब, रिश्वत और अन्य बुराईयों के खिलाफ प्रेरित करती हैं। प्रथम भाग में रेगिस्तान में पानी की खोज में प्यासे हिरणों को दिखाया गया हैं। द्वितीय भाग में शराब का सेवन करने वाले तथा कई महिलाओं के साथ व्यभिचार करते पुरुष दिखलायी देते हैं। अन्तिम भाग में अपराधी अपने कर्मो का मोल नरक की आग में जलकर चुका रहे हैं। इन सभी चित्रों के अन्दर प्रेरणा छिपी हुई हैं।

गीता प्रेस का मुख्य प्रवेश द्वार

गीता प्रेस का मुख्य प्रवेश द्वार अपनी उत्कृष्ट संरचना के लिए विश्व प्रसिद्व हैं। संस्था का मुख्य प्रवेश द्वार प्रतीकात्मक गीता द्वार का स्वरुप हैं, जिसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति ड़ॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने 29 अप्रैल 1955 को किया था। गीता द्वार के निर्माण में देश की गौरवमयी प्राचीन कला और मन्दिरों से प्रेरणा ली गयी हैं। भारत की समृद्व वास्तुकला द्वार के प्रत्येक पहलू का प्रतिनिधित्व करती हैं। उदाहरणस्वरुप– प्रवेश द्वार के खम्भें प्रसिद्व गुफा मन्दिर एलोरा के स्तम्भों पर आधारित हैं। मध्य भाग में बना गोलाकार खोखला अजन्ता गुफा मन्दिर की याद दिलाता हैं। प्रवेश द्वार का शिखर दक्षिण भारत के मिनाक्षी मन्दिर (मदुरै) के प्रमुख भाग को दर्शाता हैं।

कला–साधक चितेरो द्वारा बनाए धार्मिक चित्र

विश्वभर में फैले करोड़ों अध्यात्मप्रेमी गीता प्रेस के चित्रों के प्रशंसक हैं। इन चित्रों को आज भी अनेकों धर्म प्रेमियों ने अपने घरों में सहेजकर रखा हैं। इन चित्रों के आधार पर देश के विभिन्न मन्दिरों में अनेको प्रतिमाओं का निर्माण हुआ हैं। यह चित्र जन–जन के ह्रदय में इस प्रकार रच–बस गए हैं कि हिन्दू देवी–देवताओं का ध्यान करते ही चित्रों में अंकित छवि सर्वप्रथम सामने आ जाती हैं। ये चित्र शास्त्रीय रीति से अंकित किए गए हैं जो दर्शक के मन को प्रभावित कर लेते हैं। सौम्य, पवित्र, कमनिये ऐसी मनोहर छवियाँ जो किसी को भी मंत्र–मुग्ध कर लेती हैं, विनय कुमार मित्रा की कल्पना और हुनर का प्रमाण हैं। रंगो–रेखाओं को संजोने में सिद्वहस्त कलाकार दीवारों पर कोयले से चित्र बनाता था। इन पर अपने बड़े भाई उपेन्द्र का विशेष प्रभाव था, जो धार्मिक चित्रण किया करते थे। लकड़ी के कोयले से दीवारों पर चित्र उकेरना और उनमें लाइनों के माध्यम से उभार लाना, कला के क्षेत्र में इनका पदार्पण था। विवाह आदि अवसरों पर देवी–देवताओं के चित्रों से दीवारों को सुसज्जित किया करते थे। यह अभ्यास धीरे–धीरे बढ़ता चला गया और कालान्तर में ये धार्मिक चित्र बनाने में सिद्व निपुण हो गए। प्रयाग के एक सन्त ब्रहमचारी ने इनको अपने पास बुलाकर चित्र बनाने के लिए कहा, क्योकि वे इनके कार्य से अत्यधिक प्रसन्न हुए थे। फिर वहीं इनकी मुलाकात भाई जी से हुई और मित्रा जी उनके साथ गोरखपुर आ गए। गीता प्रेस में हिन्दू पौाराणिक ग्रन्थों के आधार पर चित्र बनाना आरम्भ कर दिया। वी0 के0 मित्रा जी को गीता प्रेस से जुड़े चार दशक से अधिक समय व्यतीत हो गया। तब उन्होंने रामायण व महाभारत के प्रंसगों पर आधारित 4500 से अधिक रंगीन चित्रों, हजारों रेखा चित्रों एवं श्वेत–श्याम चित्रों का निर्माण किया। **(चित्र संख्या–7)**

वी0 के0 मित्रा ने श्रीरामदरबार, भगवान विष्णु महाप्रयाण के समय भीष्म, योद्वावेश में श्रीकृष्ण,

श्रीकृष्ण द्वारा माता–पिता को बन्धन से मुक्ति, लक्ष्मण–निष्कासन, अशोक वाटिका में हनुमान, शबरी के अतिथि और अहिल्या उद्धार के चित्रों में रंग भर उनको सजीव किया। वे वाश पेण्टिग सबसे अधिक बनाते थे और पोस्टर या ट्यूब–रंगों का प्रयोग करते थे। गीता प्रेस तथा गीता वाटिका में उनके द्वारा निर्मित अनेकों बड़े–बड़े चित्रों को प्रदर्शित किया गया हैं। इनमें कुछ तैलचित्र व कुछ जलरंग चित्र हैं। गीता प्रेस के लीला भवन में उनके बनाए खूबसूरत चित्रों की श्रृंखला आज भी देखी जा सकती हैं। हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों के आधार पर जीवन्त चित्र बनाना विनय कुमार मित्रा की पहचान बन गया। उन्होंने भगवान राम और श्रीकृष्ण के बाल्यकाल से लेकर युवावस्था तक के अनगिनत चित्र बनाए। जगन्नाथ प्रसाद गुप्त तथा भगवानदास जैसे शिष्यों ने गीता प्रेस में उनकी परम्परा को और समृद्व किया। **(चित्र संख्या–8)**

गोरखपुर की कला के विकास में चित्रकार जगन्नाथ प्रसाद गुप्त का अभूतपूर्व योगदान रहा हैं। अमेरिका द्वारा ''नोटेड़ हिन्दू इलेस्ट्रेटर'' की मानक उपाधि प्रदान की गयी थी। उनके द्वारा **''अग्रवाल भवन'' (आर्यनगर, गोरखपुर) में हस्तनिर्मित अनोखी वस्तुओं की प्रदर्शनी लगायी गयी, जैसे–मिश्री की ड़ली पर सोने–चाँदी के तारों से निर्मित मक्खी, एक दाने चावल पर 121 अक्षरों की नक्काशी, चने की दाल पर चाँद का हाथी इत्यादि।**[5] जगन्नाथ ने 'कल्याण' के अतिरिक्त 'गीता', 'धर्म', 'सरिता', 'संगीत', 'आरोग्य', जैसी पत्रिकाओं के लिए भी चित्र बनाए। जगन्नाथ प्रसाद गुप्त ने गीता प्रेस के लिए दो हजार से अधिक चित्र निर्मित किए। जगन्नाथ ने गीता प्रेस से प्रकाशित छः खण्ड़ों में सम्पूर्ण महाभारत में सैकड़ों की संख्या में चित्र बनाए, जो बहुरंगी, श्वेत–श्याम और रेखाचित्रों के रुप में छापे गये। उन्होंने जाम्बवती परिणय, पार्थ सारथी कृष्ण, श्रीराम सभा, रावण की सभा में अंगद, जनकपुरी में राम–लक्ष्मण जैसे चित्रों को रंगो द्वारा जीवंत किया। जगन्नाथ ने भारत के विभिन्न गुफा मन्दिरों की शैलियों का समावेश करके गीता प्रेस के मुख्य द्वार का मॉड़ल तैयार किया था। गोरक्षनाथ मन्दिर का मॉड़ल बनाने का कार्यभार भी उन्होंने ही सम्भाला। गीतावाटिका, गोरखपुर में राधा–अष्टमी के सुअवसर पर सज्जित राधा–माधव के अनेक चित्रों और मुख्य हॉल में महाराजा अग्रसेन आदि के आदमकद तैलचित्रों को गुप्त जी ने अपनी कला–साधना से साधकर अनोखा परिचय दिया। **(चित्र संख्या–9)**

भगवान के नाम से प्रसिद्व ''भगवानदास'' एक महान चित्रकार थे जिन्होंने गीता प्रेस के साथ मिलकर सनातन–धर्म की बहुमूल्य सेवा की। उन्होंने वैद्यनाथ आयुर्वेद भण्ड़ार तथा डाबर के प्रतीक चिन्हों जैसे नामी उत्पादों के लिए चित्रकारी की। साथ ही यशोदा द्वारा श्रीकृष्ण का कान ऐंठना, रामभक्त हनुमान द्वारा सीना चीरकर भगवान राम व माता सीता की शोभा दिखाने वाली छवि को अपने चित्रों से यादगार बनाया। पचास के दशक में उन्होंने प्रसिद्व फिल्म–अभिनेता पृथ्वीराज कपूर का एक आदमकद रंगीन चित्र बनाया, जिससे प्रभावित होकर कपूर साहब उनको मुम्बई ले जाना चाहते थे, किन्तु गोरखपुर में अपनी भक्ति–रचना के चलते जाने से मना कर दिया। **(चित्र संख्या–10)** विनय कुमार मित्रा, जगन्नाथ प्रसाद गुप्त और भगवानदास तीनों कलाकारों में चित्रकारी का जुनून था। वह जब चित्र बनाने के लिए बैठते थे तो उसको पूरा करने के बाद ही उठते थे। भले ही उस चित्र को बनाने में 24 घण्टे से ज्यादा समय लग जाए। अतः ऐसे दिग्गज कलाकारों ने ही गीता प्रेस की नींव को मजबूत बनाकर

उसे आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाया हैं।

गीता प्रेस की धार्मिक पुस्तकों में उत्कीर्ण किए गये हिन्दू देवी–देवताओं के उत्कृष्ट छायाचित्र उनके दिव्य रुप के दर्शन कराते हैं। भारतीय धर्म एवं संस्कृति को अपनाते हुए धार्मिक पुस्तकों के प्रचार एवं प्रसार का कार्य देश–विदेश में स्थापित किया हैं–गीता प्रेस ने। यहाँ की धार्मिक पुस्तकों के विभिन्न संस्करणों में श्रीरामचरित्रमानस, श्रीमद्भगवत्गीता, श्रीशिवपुराण, महाभारत, गर्गसंहिता, गरुड़पुराण, विष्णुपुराण, महिलाओं एवं बालपयोगी पुस्तकें भक्त–चरित्र एवं भजनमाला आदि पुस्तकें शामिल हैं। पत्रिकाओं में छपने वाली मासिक पत्रिका कल्याण (हिन्दी) एवं कल्याण–कल्पतरु (अंग्रेजी) विश्वविख्यात हैं। इन आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक पत्रिकाओं को प्रकाशित करने का श्रेय गीता प्रेस को जाता हैं।

सन्दर्भ–संकेत

1. शुक्ल रामचन्द्र – *'कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ,* विद्यामन्दिर प्रेस मानमन्दिर, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1958, पृ –**37**
2- http:// www.livehindustan.com vt; JhokLro] xksj[kiqj 26 Sep; 2018, 10:19 PM
3- http:// m.facebook.com/geetapressgorakhpur 09 Feb 2013.
4- http:// m.timesofindia.com 24 Nov 2012.
5. पाण्ड़ेय ड़ॉ0 वेदप्रकाश – शहरनामा गोरखपुर, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 2017, प्रथम संस्करण, पृ– **222**

चित्र संख्या (1 व 2)

चित्र संख्या (3 व 4)

चित्र संख्या (5 व 6)

(चित्र संख्या 7 व 8)

¼fp= la[;k 9 o 10½